International Journal of Research in Hindi
www.hindijournal.in
ISSN: 2582-3493
Received: 30-07-2026, Accepted: 31-08-2026, Published: 15-09-2026
Volume 8, Issue 3, 2026, Page No. 45-48

भारतीय ज्ञान परम्परा और राष्ट्रीय चेतना : हिन्दी साहित्य के विशेष संदर्भ में

विनय खाण्डेकर [1], डॉ. स्नेहलता निर्मलकर [2]
[1] शोधार्थी, हिन्दी विभाग डॉ.सी.व्ही.रमन विश्वविद्यालय करगी रोड, कोटा, बिलासपुर, छत्तीसगढ़, भारत
[2] शोध निर्देशक, हिन्दी विभाग डॉ.सी.व्ही.रमन विश्वविद्यालय करगी रोड, कोटा, बिलासपुर, छत्तीसगढ़, भारत
DOI: https://doi.org/10.66856/ijrh.2026.8.3.8063

सारांश
भारतीय ज्ञान परम्परा विश्व की प्राचीनतम एवं समृद्ध ज्ञान परम्पराओं में से एक है। इसका आधार केवल दार्शनिक चिंतन तक सीमित नहीं है, बल्कि यह मानव जीवन के नैतिक, आध्यात्मिक, सांस्कृतिक, सामाजिक तथा राष्ट्रीय पक्षों को भी समान रूप से प्रभावित करती है। वेद, उपनिषद, रामायण, महाभारत, भगवद्गीता, बौद्ध एवं जैन साहित्य तथा भारतीय दर्शन की विविध धाराओं ने ज्ञान, कर्तव्य, सत्य, अहिंसा, समन्वय, जनकल्यांण और वसुधैव कुटुम्बकम जैसी सार्वभौमिक मान्यताओं का विकास किया। यही मूल्य आगे चलकर भारतीय समाज की राष्ट्रीय चेतना के आधार बने। हिन्दी साहित्य ने इन मूल्यों को जन–जन तक पहुँचाने में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। आदिकाल से लेकर आधुनिक काल तक हिन्दी साहित्यकारों ने भारतीय संस्कृति, राष्ट्रीय अस्मिता, सामाजिक समरसता तथा स्वतंत्रता चेतना को साहित्यिक अभिव्यक्ति प्रदान की। विशेष रूप से भारतेंदु हरिश्चन्द्र, मैथिलीशरण गुप्त, प्रेमचन्द, माखनलाल चतुर्वेदी, रामधारी सिंह दिनकर, जयशंकर प्रसाद तथा अन्य साहित्यकारों ने भारतीय ज्ञान परम्परा के मूल तत्वों को राष्ट्रीय चेतना के साथ जोडकर प्रस्तुत किया। उनके साहित्य में राष्ट्र केवल भौगोलिक इकाई नहीं, बल्कि सांस्कृतिक, आध्यात्मिक एवं नैतिक चेतना का जीवंत स्वरूप है। वर्तमान वैश्वीकरण, उपभोक्तावाद तथा तकनीकी परिवर्तन के युग में भारतीय ज्ञान परम्परा और राष्ट्रीय चेतना की प्रासंगिकता और अधिक बढ गई है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 ने भी भारतीय ज्ञान प्रणाली को शिक्षा के मुख्य प्रवाह में सम्मिलित करने का प्रयास किया है।

मूल शब्दः भारतीय ज्ञान परम्परा, राष्ट्रीय चेतना, साहित्य, संस्कृति, राष्ट्रवाद, लोकमंगल, नैतिक मूल्य, भारतीय दर्शन

भारत की सांस्कृतिक पहचान उसकी प्राचीन ज्ञान परम्परा में निहित है। भारतीय ज्ञान परम्परा केवल ग्रंथों में निहित ज्ञान का संग्रह नहीं है, बल्कि यह जीवन जीने की एक समग्र पद्धति है, जिसमें व्यक्ति, समाज, प्रकृति और ब्रह्मांड के मध्य संतुलित संबंध स्थापित करने का प्रयास किया गया है। इस परम्परा का विकास हजारों वर्षों के अनुभव, चिंतन, तप, अनुसंधान तथा सामाजिक जीवन के व्यावहारिक प्रयोगों से हुआ है। भारतीय ऋषियों ने ज्ञान को केवल बौद्धिक उपलब्धि नहीं माना, बल्कि आत्मबोध, लोककल्याण तथा मानवता की उन्नति का माध्यम माना। भारतीय ज्ञान परम्परा के मूल में सत्य, धर्म, अहिंसा, करुणा, समन्वय, सहिष्णुता, आत्मसंयम, पर्यावरण संरक्षण तथा लोकमंगल जैसी अवधारणाएँ विद्यमान हैं। वेदों,उपनिषदों तथा भगवदगीता में निष्काम कर्म का सिद्धांत भारतीय जीवन–दर्शन के आधार हैं। इन आदर्शों ने भारतीय समाज में राष्ट्रीय एकता, सामाजिक समरसता और सांस्कृतिक अखण्डता को निरंतर सुदृढ किया राष्ट्रीय चेतना किसी राष्ट्र के नागरिकों में अपनी संस्कृति, इतिहास, भाषा, परम्पराओं, मूल्यों तथा राष्ट्रीय हितों के प्रति जागरूकता, उत्तरदायित्व एवं समर्पण की भावना है। भारतीय राष्ट्रीय चेतना का स्वरूप पश्चिमी राष्ट्रवाद से भिन्न है। यहाँ राष्ट्र की अवधारणा केवल राजनीतिक सीमाओं तक सीमित नहीं है, बल्कि सांस्कृतिक एकात्मता, आध्यात्मिक दृष्टि और लोककल्याण पर आधारित है। इसी कारण भारत की राष्ट्रीय चेतना में विविधता में एकता, सह–अस्तित्व और समन्वय प्रमुख तत्व हैं। हिन्दी साहित्य ने भारतीय ज्ञान परम्परा और राष्ट्रीय चेतना को व्यापक जनमानस तक पहुँचाने का कार्य किया है। भक्तिकालीन संतों ने जाति–पाँति और सामाजिक भेदभाव का विरोध करते हुए मानव समानता और आध्यात्मिक एकता का संदेश दिया। रीतिकाल के पश्चात आधुनिक युग में भारतेंदु हरिश्चन्द्र ने राष्ट्रीय जागरण का सूत्रपात किया। द्विवेदी युग में हिन्दी साहित्य सामाजिक सुधार और राष्ट्रीय चेतना का माध्यम बना। छायावाद और प्रगतिवाद के साहित्यकारों ने स्वतंत्रता आन्दोलन, सामाजिक न्याय तथा सांस्कृतिक अस्मिता को नई अभिव्यक्ति प्रदान की।

आज जब वैश्वीकरण, उपभोक्तावाद, सांस्कृतिक विखंडन तथा तकनीकी परिवर्तन के कारण मानवीय मूल्यों पर संकट उत्पन्न हो रहा है, तब भारतीय ज्ञान परम्परा पुनः विश्व का ध्यान आकर्षित कर रही है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 में भारतीय ज्ञान प्रणाली को शिक्षा का अभिन्न अंग बनाने का उद्देश्य इसी सांस्कृतिक पुनर्जागरण का संकेत है। हिन्दी साहित्य इस ज्ञान परम्परा को आधुनिक समाज से जोड़ने का प्रभावी माध्यम है।

भारतीय ज्ञान परम्परा की अवधारणा

भारतीय ज्ञान परम्परा का तात्पर्य उस सतत् बौद्धिक, दार्शनिक, आध्यात्मिक तथा सांस्कृतिक परम्परा से है, जिसका विकास वैदिक काल से लेकर आधुनिक युग तक निरंतर होता रहा है। यह परम्परा अनुभव, तर्क, साधना, प्रयोग और लोकजीवन के समन्वय पर आधारित है। भारतीय ज्ञान प्रणाली में ज्ञान को केवल सूचना कौशल तक सीमित नहीं माना गया, बल्कि उसे आत्मज्ञान, नैतिक विकास और लोककल्याण का माध्यम माना गया है। भारतीय ज्ञान परम्परा के प्रमुख स्रोत वेद, उपनिषद, ब्राह्मण ग्रंथ, आरण्यक, रामायण, महाभारत, भगवद्गीता, पुराण, बौद्ध त्रिपिटक, जैन आगम, योग, आयुर्वेद, अर्थशास्त्र, नाट्यशास्त्र तथा विभिन्न दार्शनिक दर्शनों में उपलब्ध हैं। इन ग्रंथों में मानव जीवन के प्रत्येक पक्षकृशिक्षा, चिकित्सा, शासन, पर्यावरण, अर्थव्यवस्था, नैतिकता तथा आध्यात्मिकताकृका समग्र विवेचन मिलता है। भारतीय ज्ञान परम्परा की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता इसका समन्वयवादी स्वरूप है। यहाँ ज्ञान का उद्देश्य व्यक्ति के समग्र विकास के साथ–साथ समाज और विश्व के कल्याण को सुनिश्चित करना है। श्सा विद्या या विमुक्तयेश का सिद्धांत शिक्षा को केवल रोजगार का साधन नहीं, बल्कि आत्ममुक्ति और

मानवीय उत्थान का माध्यम मानता है। भारतीय ज्ञान परम्परा में प्रकृति और मानव के मध्य संतुलन पर विशेष बल दिया गया है। पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि तथा आकाश को जीवन का आधार मानते हुए उनके संरक्षण की प्रेरणा दी गई है। यही कारण है कि वर्तमान पर्यावरणीय संकट के संदर्भ में भारतीय ज्ञान प्रणाली की प्रासंगिकता और अधिक बढ़ गई है।

राष्ट्रीय चेतना की अवधारणा

राष्ट्रीय चेतना वह भावात्मक, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक एवं नैतिक चेतना है जो किसी राष्ट्र के नागरिकों को साझा पहचान, उत्तरदायित्व और राष्ट्रीय हित के प्रति समर्पित करती है। भारतीय राष्ट्रीय चेतना का विकास केवल राजनीतिक संघर्षों का परिणाम नहीं है, बल्कि यह भारतीय संस्कृति, धर्म, दर्शन, भाषा, साहित्य और लोकजीवन की दीर्घकालीन परम्परा से निर्मित हुई है। भारतीय राष्ट्रीय चेतना का आधार सांस्कृतिक एकता है। विभिन्न भाषाओं, धर्मों, जातियों और परम्पराओं के होते हुए भी भारत की मूल सांस्कृतिक चेतना एक है। यही कारण है कि भारतीय राष्ट्रीयता का स्वरूप समावेशी बहुलतावादी तथा मानवीय मूल्यों पर आधारित है। हिन्दी साहित्य ने राष्ट्रीय चेतना को जन–आन्दोलन का स्वरूप प्रदान किया। भारतेंदु हरिश्चन्द्र ने राष्ट्रीय स्वाभिमान का संदेश दिया, मैथिलीशरण गुप्त ने भारत–भारती के माध्यम से राष्ट्रप्रेम को जनमानस तक पहुँचाया, प्रेमचन्द ने सामाजिक समानता और राष्ट्रीय एकता का समर्थन किया, जबकि माखनलाल चतुर्वेदी और रामधारी सिंह श्दिनकरश ने स्वतंत्रता, स्वाभिमान और सांस्कृतिक गौरव को अपनी रचनाओं का केंद्रीय विषय बनाया। समकालीन भारत में राष्ट्रीय चेतना का अर्थ केवल देशभक्ति नहीं, बल्कि संविधान के आदर्शों, सांस्कृतिक विरासत, सामाजिक न्याय, पर्यावरण संरक्षण, वैज्ञानिक दृष्टिकोण तथा वैश्विक मानव कल्याण के प्रति उत्तरदायित्व भी है। भारतीय ज्ञान परम्परा इन सभी मूल्यों को एक व्यापक दार्शनिक आधार प्रदान करती है।

हिन्दी साहित्य में भारतीय ज्ञान परम्परा और राष्ट्रीय चेतना

भारतीय ज्ञान परम्परा का मूल उद्देश्य मानव जीवन को सत्य, धर्म, करुणा, समरसता तथा लोककल्याण की दिशा में उन्मुख करना है। यह परम्परा केवल धार्मिक या आध्यात्मिक विचारों तक सीमित नहीं है, बल्कि सामाजिक संगठन, नैतिक जीवन, शिक्षा, संस्कृति, पर्यावरण, शासन व्यवस्था तथा मानवीय संबंधों का भी समग्र दर्शन प्रस्तुत करती है। हिन्दी साहित्य ने इन मूल्यों को विभिन्न युगों में जनमानस तक पहुँचाने का कार्य किया। यही कारण है कि हिन्दी साहित्य भारतीय ज्ञान परम्परा का सशक्त संवाहक तथा राष्ट्रीय चेतना का प्रभावशाली माध्यम माना जाता है। हिन्दी साहित्य का विकास भारतीय समाज की सांस्कृतिक चेतना के साथ हुआ है। प्रत्येक साहित्यिक युग में तत्कालीन सामाजिक परिस्थितियों के अनुरूप भारतीय ज्ञान परम्परा के विभिन्न आयाम अभिव्यक्त हुए। आदिकाल में वीरता, राष्ट्ररक्षा और स्वाभिमान की भावना प्रमुख रही। भक्तिकाल में मानवता, समानता, आध्यात्मिकता तथा सामाजिक समरसता का स्वर मुखर हुआ। आधुनिक काल में राष्ट्रीय जागरण, स्वतंत्रता चेतना, सामाजिक सुधार और सांस्कृतिक पुनर्जागरण साहित्य का मुख्य उद्देश्य बन गया।

1. आदिकाल में राष्ट्रीय चेतना के बीज

आदिकालीन हिन्दी साहित्य में राष्ट्र की अवधारणा वर्तमान राजनीतिक अर्थों में विकसित नहीं थी, किन्तु मातृभूमि की रक्षा, स्वाभिमान, त्याग और वीरता की भावना स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। पृथ्वीराज रासो जैसे ग्रंथों में केवल किसी राजा की वीरता का वर्णन नहीं है, बल्कि देश और संस्कृति की रक्षा का आदर्श भी प्रस्तुत किया गया है। यह राष्ट्रीय चेतना का प्रारम्भिक रूप था।भारतीय ज्ञान परम्परा में धर्म का अर्थ केवल धार्मिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि कर्तव्य, न्याय और जनकल्यांण है। यही दृष्टि आदिकालीन साहित्य में भी दिखाई देती है।

2. भक्तिकाल में भारतीय ज्ञान परम्परा का लोकव्यापीकरण

भक्तिकाल भारतीय ज्ञान परम्परा के लोकमंगल स्वरूप का सबसे प्रभावशाली काल माना जाता है। इस युग में ज्ञान केवल संस्कृत ग्रंथों तक सीमित नहीं रहा, बल्कि लोकभाषाओं के माध्यम से सामान्य जनता तक पहुँचा। कबीर, तुलसीदास, सूरदास, मीराबाई, रैदास तथा दादूदयाल जैसे संतों ने भारतीय दर्शन के मूल तत्वों को सहज भाषा में व्यक्त किया। कबीर ने जाति, पंथ और धार्मिक आडंबर का विरोध करते हुए मानव समानता का संदेश दिया। उनके अनुसार ईश्वर प्रत्येक प्राणी में विद्यमान है, इसलिए मनुष्य–मनुष्य में भेदभाव का कोई औचित्य नहीं है। यह विचार उपनिषदों से जुडा हुआ है। कबीर का साहित्य राष्ट्रीय एकता की सांस्कृतिक आधारशिला को मजबूत करता है। उन्होंने हिन्दू और मुस्लिम दोनों समुदायों को आत्मचिंतन का संदेश देकर सामाजिक समरसता का मार्ग प्रशस्त किया। गोस्वामी तुलसीदास ने रामचरितमानस के माध्यम से भारतीय जीवन मूल्यों को जन–जन तक पहुँचाया। उनके राम केवल धार्मिक आराध्य नहीं हैं, बल्कि आदर्श शासक, आदर्श पुत्र, आदर्श मित्र और आदर्श मानव हैं। रामराज्य की अवधारणा न्याय, समानता, करुणा और लोककल्याण पर आधारित है। यह भारतीय ज्ञान परम्परा के सर्वोच्च आदर्शों का प्रतिनिधित्व करती है। तुलसीदास का साहित्य सामाजिक समन्वय, सांस्कृतिक एकता तथा राष्ट्रीय मूल्यों को सुदृढ करने वाला साहित्य है।

3. भारतेंदु युग में आधुनिक राष्ट्रीय चेतना का प्रारम्भ

उन्नीसवीं शताब्दी में भारत अंग्रेजी शासन के अधीन था। इस समय भारतीय समाज राजनीतिक दासता, आर्थिक शोषण तथा सांस्कृतिक हीनता से जूझ रहा था। ऐसे समय में भारतेंदु हरिश्चन्द्र ने हिन्दी साहित्य को राष्ट्रीय जागरण का माध्यम बनाया। उन्होंने भारतीय संस्कृति, स्वदेशी, मातृभाषा, शिक्षा तथा आर्थिक स्वावलम्बन पर बल दिया। उनकी प्रसिद्ध पंक्ति ''निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल।'' राष्ट्रीय चेतना की आधारशिला मानी जाती है। भारतेंदु ने स्पष्ट किया कि भाषा केवल संचार का माध्यम नहीं, बल्कि राष्ट्रीय अस्मिता का आधार है। भारतीय ज्ञान परम्परा के संरक्षण में मातृभाषा की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है।

4. द्विवेदी युग और राष्ट्रीय पुनर्जागरण

महावीर प्रसाद द्विवेदी के नेतृत्व में हिन्दी साहित्य सामाजिक सुधार तथा राष्ट्रीय जागरण का सशक्त माध्यम बना। इस काल के साहित्यकारों ने भारतीय संस्कृति, नैतिकता तथा राष्ट्रीय चरित्र निर्माण पर विशेष बल दिया। मैथिलीशरण गुप्त मैथिलीशरण गुप्त की भारत–भारती राष्ट्रीय चेतना का महत्वपूर्ण ग्रंथ है। इसमें भारत के गौरवशाली अतीत, वर्तमान की चुनौतियों तथा उज्ज्वल भविष्य का चित्रण मिलता है। गुप्त ने भारतीय ज्ञान परम्परा को राष्ट्रीय पुनर्निर्माण का आधार माना। उनके साहित्य में नारी सम्मान, सामाजिक समानता, राष्ट्रीय एकता तथा सांस्कृतिक गौरव की भावना स्पष्ट रूप से दिखाई देती है।

5. प्रेमचन्द और सामाजिक राष्ट्रीयता

प्रेमचन्द ने राष्ट्रीय चेतना को केवल राजनीतिक स्वतंत्रता तक सीमित नहीं रखा, बल्कि सामाजिक न्याय, आर्थिक समानता तथा मानवीय गरिमा से जोडा। उनके उपन्यास गोदान, रंगभूमि, कर्मभूमि तथा कहानियाँ भारतीय समाज की वास्तविक समस्याओं

को सामने लाती हैं। प्रेमचन्द के अनुसार सच्ची राष्ट्रीयता तभी संभव है जब समाज में समान अवसर, न्याय और मानव सम्मान स्थापित हो। उनका साहित्य भारतीय ज्ञान परम्परा के सर्वजन हिताय, सर्वजन सुखाय के आदर्श का आधुनिक रूप प्रस्तुत करता है।

6. माखनलाल चतुर्वेदी और राष्ट्रप्रेम

माखनलाल चतुर्वेदी की कविता की रचना पुष्प की अभिलाषा भारतीय राष्ट्रीय चेतना का अमर प्रतीक है। इसमें कवि स्वयं को मातृभूमि पर बलिदान होने वाले वीरों के चरणों में अर्पित करना चाहता है। यह कविता केवल देशभक्ति का गीत नहीं, बल्कि त्याग, सेवा, कर्तव्य और लोकमंगल की भारतीय ज्ञान परम्परा का साहित्यिक रूप है।

7. रामधारी सिंह दिनकर और सांस्कृतिक राष्ट्रवाद

दिनकर ने भारतीय इतिहास, संस्कृति तथा दर्शन को आधुनिक राष्ट्रीय चेतना से जोडा। संस्कृति के चार अध्याय में उन्होंने भारतीय संस्कृति की समन्वयवादी परम्परा का विश्लेषण किया है। कुरुक्षेत्र, रश्मिरथी तथा परशुराम की प्रतीक्षा जैसी रचनाओं में धर्म, न्याय, राष्ट्रधर्म तथा मानवता का समन्वित स्वर मिलता है। दिनकर के अनुसार भारतीय संस्कृति की सबसे बडी शक्ति उसकी आत्मसात् करने की क्षमता है। यही भारतीय ज्ञान परम्परा का मूल स्वरूप है।

8. समकालीन परिप्रेक्ष्य

वर्तमान समय में वैश्वीकरण, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, डिजिटल संस्कृति तथा उपभोक्तावाद ने नई चुनौतियाँ उत्पन्न की हैं। इन परिस्थितियों में भारतीय ज्ञान परम्परा मानव–केंद्रित विकास, नैतिक तकनीकी उपयोग, पर्यावरण संरक्षण, सामाजिक समरसता तथा वैश्विक शांति का मार्ग प्रस्तुत करती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 में भारतीय ज्ञान प्रणाली को शिक्षा का अभिन्न अंग बनाने पर विशेष बल दिया गया है। हिन्दी साहित्य इस ज्ञान परम्परा को आधुनिक पीढी तक पहुँचाने का प्रभावी माध्यम बन सकता है। हिन्दी साहित्य भारतीय ज्ञान परम्परा और राष्ट्रीय चेतना के मध्य एक सशक्त सेतु है। कबीर से लेकर दिनकर तक हिन्दी साहित्यकारों ने भारतीय संस्कृति के शाश्वत मूल्यों'– सत्य, करुणा, समरसता, कर्तव्य, लोकमंगल तथा राष्ट्रप्रेम को अपनी रचनाओं में अभिव्यक्त किया है। इन मूल्यों ने भारतीय समाज में राष्ट्रीय एकता, सांस्कृतिक निरंतरता और लोकतांत्रिक चेतना को सुदृढ किया। समकालीन भारत में भी हिन्दी साहित्य भारतीय ज्ञान परम्परा के पुनर्स्मरण और राष्ट्रीय चरित्र निर्माण का प्रभावी साधन बना हुआ है। समकालीन परिप्रेक्ष्य, राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020। इक्कीसवीं शताब्दी विज्ञान, प्रौद्योगिकी, वैश्वीकरण, कृत्रिम बुद्धिमत्ता डिजिटल संचार तथा ज्ञान–आधारित अर्थव्यवस्था का युग है। इन परिवर्तनों ने मानव जीवन को अभूतपूर्व सुविधाएँ प्रदान की हैं, किन्तु साथ ही सांस्कृतिक विखंडन, नैतिक मूल्यों के ह्रास, पर्यावरणीय संकट, उपभोक्तावाद तथा मानसिक तनाव जैसी गंभीर चुनौतियाँ भी उत्पन्न की हैं। ऐसे समय में भारतीय ज्ञान परम्परा केवल अतीत की सांस्कृतिक धरोहर नहीं, बल्कि वर्तमान और भविष्य के लिए एक व्यवहारिक ज्ञान–दृष्टि के रूप में उभरती है।

भारतीय ज्ञान परम्परा का मूल स्वर समन्वय, संतुलन तथा सतत् विकास है। यह मनुष्य, समाज, प्रकृति तथा ब्रह्माण्ड के मध्य परस्पर निर्भरता को स्वीकार करती है। वेदों, उपनिषदों, भगवद्गीता, बौद्ध और जैन दर्शन, योग, आयुर्वेद तथा अर्थशास्त्र में जीवन के ऐसे सिद्धान्त प्रतिपादित किए गए हैं जो आज भी वैश्विक चुनौतियों के समाधान में उपयोगी सिद्ध हो सकते हैं। जलवायु परिवर्तन, जैव विविधता संरक्षण, नैतिक नेतृत्व, सामाजिक समावेशन तथा मानसिक स्वास्थ्य जैसे विषयों पर भारतीय ज्ञान परम्परा की अवधारणाएँ समकालीन विमर्श को नई दिशा प्रदान करती हैं। राष्ट्रीय चेतना का स्वरूप भी समय के साथ विकसित हुआ है। आज राष्ट्रीयता का अर्थ केवल राजनीतिक स्वतंत्रता नहीं, बल्कि संविधान के प्रति निष्ठा, सांस्कृतिक विरासत का संरक्षण, सामाजिक न्याय, लैंगिक समानता, पर्यावरणीय उत्तरदायित्व तथा वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास भी है। इस व्यापक राष्ट्रीय चेतना के निर्माण में हिन्दी साहित्य की भूमिका निरंतर महत्वपूर्ण बनी हुई है। समकालीन हिन्दी साहित्यकार भारतीय ज्ञान परम्परा के मूल्यों को आधुनिक संदर्भों– लोकतंत्र, मानवाधिकार, डिजिटल समाज और वैश्विक नागरिकता से जोडकर पुर्नपरिभाशित कर रहे हैं।

भारतीय ज्ञान परम्परा और राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020

राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 भारतीय शिक्षा व्यवस्था में एक महत्वपूर्ण परिवर्तनकारी दस्तावेज है। इस नीति का एक प्रमुख उद्देश्य भारतीय ज्ञान प्रणाली को शिक्षा के मुख्य प्रवाह में सम्मिलित करना है। नीति में स्पष्ट किया गया है कि शिक्षा केवल रोजगार प्राप्त करने का साधन नहीं, बल्कि चरित्र निर्माण, नैतिक विकास, आलोचनात्मक चिंतन, रचनात्मकता तथा सांस्कृतिक आत्मबोध का माध्यम होनी चाहिए।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 के अंतर्गत निम्न प्रमुख बिंदु भारतीय ज्ञान परम्परा से प्रत्यक्ष रूप से जुडे हुए हैं–

1. भारतीय भाषाओं का संवर्धन मातृभाषा एवं भारतीय भाषाओं में शिक्षा को प्रोत्साहन।
2. भारतीय संस्कृति एवं विरासत का अध्ययन विद्यार्थियों को भारतीय इतिहास, दर्शन, साहित्य, कला एवं सांस्कृतिक परम्पराओं से परिचित कराना।
3. समग्र एवं बहुविषयक शिक्षा ज्ञान को विभिन्न विषयों के समन्वित अध्ययन के रूप में विकसित करना।
4. नैतिक एवं संवैधानिक मूल्य सत्यनिष्ठा, सहिष्णुता, सेवा, लोकतांत्रिक आचरण तथा सामाजिक उत्तरदायित्व का विकास।
5. अनुसंधान एवं नवाचार भारतीय ज्ञान प्रणाली को आधुनिक वैज्ञानिक अनुसंधान के साथ जोडना।
6. अनुभवात्मक अधिगम केवल सैद्धान्तिक ज्ञान नहीं, बल्कि जीवनोपयोगी कौशल एवं व्यवहारिक शिक्षा पर बल।

इन उद्देश्यों का प्रत्यक्ष संबंध भारतीय ज्ञान परम्परा के उस आदर्श से है जिसमें शिक्षा को मुक्ति और आत्मविकास का साधन माना गया है।

हिन्दी साहित्य की समकालीन प्रासंगिकता

हिन्दी साहित्य भारतीय ज्ञान परम्परा और राष्ट्रीय चेतना का सबसे प्रभावी माध्यम रहा है तथा वर्तमान समय में इसकी भूमिका और अधिक महत्वपूर्ण हो गई है। डिजिटल माध्यमों, ई–पुस्तकों, ऑनलाइन शिक्षण, शोध डेटाबेस तथा कृत्रिम बुद्धिमत्ता के युग में हिन्दी साहित्य के माध्यम से भारतीय सांस्कृतिक विरासत का व्यापक प्रसार संभव हुआ है।

समकालीन हिन्दी साहित्य में निम्न प्रमुख प्रवृत्तियाँ भारतीय ज्ञान परम्परा से जुडती हैं–

- पर्यावरण संरक्षण एवं पारिस्थितिक चेतना।
- स्त्री–अधिकार एवं सामाजिक समानता।
- आदिवासी एवं लोकज्ञान का पुनर्मूल्यांकन।
- गांधीवादी विचारधारा एवं अहिंसा।
- संविधान, लोकतंत्र एवं नागरिक उत्तरदायित्व।
- भारतीय जीवन–मूल्यों का वैश्विक संदर्भों में पुनर्पाठ।

इस प्रकार हिन्दी साहित्य भारतीय ज्ञान परम्परा को स्थिर अतीत के रूप में नहीं, बल्कि निरंतर विकसित होती हुई जीवंत सांस्कृतिक प्रक्रिया के रूप में प्रस्तुत करता है।

निष्कर्ष

भारतीय ज्ञान परम्परा और राष्ट्रीय चेतना भारतीय सभ्यता के दो ऐसे परस्पर पूरक आधार हैं जिन्होंने भारत की सांस्कृतिक निरंतरता को हजारों वर्षों तक अक्षुण्ण बनाए रखा है। भारतीय ज्ञान परम्परा ने सत्य, धर्म, करुणा, समन्वय, लोकमंगल तथा वैश्विक बंधुत्व जैसे सार्वभौमिक मूल्यों को स्थापित किया, जबकि राष्ट्रीय चेतना ने इन मूल्यों को सामाजिक, सांस्कृतिक एवं राजनीतिक जीवन में व्यवहारिक रूप प्रदान किया। हिन्दी साहित्य ने इन दोनों धाराओं को समन्वित करते हुए भारतीय समाज में आत्मगौरव, सांस्कृतिक अस्मिता तथा राष्ट्रीय एकता का विकास किया है। समकालीन युग में जब वैश्वीकरण और तकनीकी परिवर्तन नई चुनौतियाँ प्रस्तुत कर रहे हैं, तब भारतीय ज्ञान परम्परा का पुनर्पाठ केवल सांस्कृतिक संरक्षण का प्रयास नहीं, बल्कि मानवीय सभ्यता के संतुलित विकास की आवश्यकता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 ने भारतीय ज्ञान प्रणाली को शिक्षा के केंद्र में स्थापित करके इस दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल की है। यह अपेक्षित है कि विश्वविद्यालयों, शोध संस्थानों तथा हिन्दी साहित्य के अध्येताओं द्वारा भारतीय ज्ञान परम्परा पर बहुआयामी एवं अंतर्विषयी शोध को प्रोत्साहित किया जाए, जिससे भारतीय बौद्धिक विरासत का समुचित संरक्षण, पुनर्पाठ एवं वैश्विक प्रसार सुनिश्चित हो सके।

संदर्भ सूची

1. अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद्. (2021). भारतीय ज्ञान प्रणाली के कार्यान्वयन हेतु दिशानिर्देश. नई दिल्ली ए.आई.सी.टी.ई.।
2. अरविन्द, श्री. (2006). भारतीय संस्कृति के आधार. पुदुच्चेरी श्री अरविन्द आश्रम.।
3. भारत सरकार, शिक्षा मंत्रालय. (2020). राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020. नई दिल्ली शिक्षा मंत्रालय.।
4. दिनकर, रामधारी सिंह. (2018). संस्कृति के चार अध्याय. प्रयागराज लोकभारती प्रकाशन.।
5. द्विवेदी, हजारीप्रसाद. (2019). कबीर. नई दिल्ली राजकमल प्रकाशन.।
6. द्विवेदी, हजारीप्रसाद. (2017). हिन्दी साहित्य की भूमिका. नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन.।
7. गुप्त, मैथिलीशरण. (2018). भारत–भारती. नई दिल्ली साहित्य अकादेमी.।
8. कबीर. (2016). कबीर ग्रंथावली (सं. श्यामसुन्दर दास). वाराणसी नागरी प्रचारिणी सभा.।
9. गांधी, मोहनदास करमचन्द. (2019). हिन्द स्वराज. अहमदाबाद नवजीवन प्रकाशन.।
10. प्रेमचन्द. (2018). साहित्य का उद्देश्य. नई दिल्ली हंस प्रकाशन.।
11. प्रसाद, जयशंकर. (2016). कामायनी. नई दिल्ली लोकभारती प्रकाशन.।
12. शुक्ल, आचार्य रामचन्द्र. (2013). हिन्दी साहित्य का इतिहास. इलाहाबाद, लोकभारती प्रकाशन।
13. शर्मा, रामविलास. (2016). भारतीय संस्कृति और हिन्दी प्रदेश. नई दिल्ली राजकमल प्रकाशन।
14. सिंह, नामवर. (2015). दूसरी परम्परा की खोज. नई दिल्ली राजकमल प्रकाशन।
15. तुलसीदास, गोस्वामी. (2022). श्रीरामचरितमानस. गोरखपुर गीता प्रेस।
16. श्रीमद्भगवद्गीता. (2022). गोरखपुर गीता प्रेस।
17. ऋग्वेद. (2021). गोरखपुर गीता प्रेस।
18. ईशावास्योपनिषद्. (2021). गोरखपुर गीता प्रेस।
19. वाल्मीकि रामायण. (2021). गोरखपुर गीता प्रेस।
20. महाभारत. (2021). गोरखपुर गीता प्रेस।
21. वर्मा, रामकुमार. (2020). हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास. इलाहाबाद लोकभारती प्रकाशन।
22. नागरी प्रचारिणी सभा. (सम्पा.). (2021). हिन्दी साहित्य का बृहत् इतिहास (खण्ड 7). वाराणसीरू नागरी प्रचारिणी सभा।
23. राधाकृष्णन, सर्वपल्ली. (अनूदित संस्करण). (2017). भारतीय दर्शन (भाग 1 एवं 2). नई दिल्ली, राजपाल एण्ड सन्स।